

ΠΕΡΙΚΕΙΡΟΜΕΝΗ

- |       |   |       |
|-------|---|-------|
| (Δα.) | ἢπαιζον· σκατοφάγος γὰρ εἰ.   |       |
| (Δω.) | πόλιν   |       |
|       | οἶκοῦντες—  |       |
| (Δα.) | ἀλλ' οὐκ ἔχομεν.  |       |
| (Δω.) | αἴβοι, λήψομαι  | 395   |
|       | σάρισαν.  |       |
| (Δα.) | ἄπαγ' ἐς κόρακας· ὡς εἴσειμ' ἐγὼ  | (206) |
|       | ἔως ἔοικας ἀ[.....]τωι.   |       |
| (Δω.) | Σωσία.  |       |
| (Δω.) | сù μὲν εὶ πρόσει μοι, Δωρί, μέγα τί σοι κακὸν<br>δώσω· сù τούτων γέγονας αἰτιωτάτη. |       |
| (Δω.) | οὗτως ὄναιο, λέγ' ὅτι πρὸς γυναικά ποι<br>δείσασα καταπέφευγε.                      | 400   |
| (Δω.) | πρὸς γυναικά ποι  | (211) |
|       | δείσασα;  |       |
| (Δω.) | καὶ γὰρ οἴχεθ' ὡς τὴν Μυρρίνην,<br>τὴν γείτον', οὗτω μοι γένοιθ' ἀ βούλομαι.        |       |
| (Δω.) | ὅραι]ς ἵν' οἴχεθ'; οὐ τὸ μέλημ' ἐστ', ἐνθάδε.                                       |       |
| (Δω.) | οὐ]δὲν ποεῖ νῦν ὥν сù βούλει, Σ[ωσία.   | 405   |
| (Δω.) | ἄπ[αγ]ε σε[αυτή]ν, ἄπ[αγ] [.....] ψευδῆλ[   | (216) |
|       | (desunt uersus fere Ix)   |       |

[XOPOR]

## ACTVS III

- (Cω.) ἐκεῖθεν ἥκει χρήματ' εἰληφώς, ἐμοὶ  
πίστευε· προδίδωσίν σε καὶ τὸ στρατόπεδον.  
(ΠΑΤΑΙΚΟΣ)  
κάθευδ' ἀπελθών, ὦ μακάριε, τὰς μάχας